सोच में इज़ाफे की पत्रिका

सदीनामा

ISSN : 2454-2121

वर्ष-17 ❐ अंक-04 ❐ 1 से 28 फरवरी, 2017 ❐ पृष्ठ-16+12 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए

बंगाल की कविता की नयी पौध

वर्ष 2015-16 की बेहतरीन कविताएं

इस वर्ष के निर्णायक : प्रभात पाण्डेय, अभिज्ञात, वसुंधरा मिश्र

संयोजक : रवि साव, **विद्यालयों से सम्पर्क** : मीनल प्रसाद

साज सज्जा एवं प्रूफ : राजेश्वर राय

संयोजकीय

नवीन प्रतिभाओं का हार्दिक अभिनन्दन

साहित्य कभी मरता नहीं अपितु और अधिक फलता-फूलता रहता है तथा अपनी सेवा हेतु कुछ मनुष्यों को चुनता है। बंगाल की धरती को साहित्य ने सदैव ही अपनी सेवा का अवसर दिया है। इसी कारण समस्त एशिया को सर्वप्रथम नोबेल पुरस्कार बंगाल के साहित्य ने ही दिलवाया। ऐसे में 'सदीनामा' इस क्षेत्र में साहित्य के प्रोत्साहन हेतु की कार्यक्रम हर वर्ष आयोजित करती रही हैं। 'विद्यार्थी स्वरचित कविता उत्सव' उनमें से ही एक है। 2011 से अब तक इसके पाँच उत्सव पूरे हो चुके हैं तथा बतौर संयोजक यह मेरा संयोजन संस्करण है।

इस प्रतियोगिता से मैं एक प्रतिभागी के रूप में जुड़ा तथा बाद में निर्णायक एवं अब संयोजक का कार्यभार सम्भाले हुए हूँ। प्रतिभागी से संयोजक तक की इस यात्रा में मैंने कई बदलाव देखे। हर वर्ष ही अलग उत्साह एवं जोश देखने को मिला। कार्यक्रम की प्रेरणा कवि प्रभात पाण्डेय तथा परिकल्पना सदीनामा के मुख्य संपादक जितेन्द्र जितांशु जी की थीं। प्रथम एवं द्वितीय संस्करण का आयोजन सदीनामा ने 'भारतीय संस्कृति संसद' के साथ मिलकर किया। उसके बाद से प्रत्येक संस्करण का आयोजन यह अकेले ही कर रही है। टीम सदीनामा इसके लिए लगातार मेहनत कर रही है तथा एक संयोजक के रूप में मैं भी अपनी भूमिका को पूरी निष्ठा से करने की कोशिश में हूँ।

गत तो वर्षों में हमने चयनित कविताओं की दो पुस्तकें 'बंगाल की नई पौध' एवं बंगाल की नई पौध-2 भी प्रकाशित कीं। इस कार्यक्रम का इतिहास है कि हमें कई प्रतिभाएँ हमेशा ही प्राप्त होती हैं। इस बार भी कुछ नई प्रतिभाएँ सामने आई हैं जिनका टीम सदीनामा हार्दिक अभिनन्दन करती हैं तथा साहित्य की दुनियां में उनका स्वागत करती है। हमें यकीन है कि इन्हें जो हमने मंच प्रदान किया है उससे वे अवश्य ही लाभान्वित होंगे। अगला संस्करण लेकर आने के वायदे के साथ।

– रवि साव

उप सम्पादक : सदीनामा, 9804442727

सम्पादकीय

बंगाल की नई पौध-4

सदीनामा कई वर्षों से बंगाल के विभिन्न विद्यालयों में लिखी जाने वाली कविताओं तक पहुँचने के प्रयास में है। चौथे वर्ष की बेहतरीन रचनाएँ, हम अपने पाठकों तक प्रेषित कर रहे हैं।

कई वर्षों से देखा गया कि विद्यालय विशेष के छात्रों की रचनाएँ, उनकी भागीदारी संख्या और अच्छी कविताओं को देखते हुए फतेपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय (सहशिक्षा) को अलग खण्ड में रखा गया है।

इस बार के निर्णायक मंडल में प्रभात पाण्डेय, अभिज्ञात एवं वसुंधरा मिश्र थीं। विद्यालय विशेष की बेहतरीन रचनाओं का चयन कवि चन्द्रिका प्रसाद पाण्डेय अनुरागी जी (बालिका शिक्षा सदन, विवेकानन्द रोड) ने किया है। संयोजक का दायित्व रवि साव ने निभाया। इस अंक की सजा-सज्जा का कार्य राजेश्वर राय ने किया।

पिछले वर्षों में निकले छात्र-कवियों के नाम जो नियमित लिख रहे हैं – रवि साव (कोलकाता), दीपक कुमार साह (कोलकाता), अविनाश मीणा (खड़गपुर), रोहित प्रसाद (आसनसोल)।हाँ, रोहित प्रसाद की रचनाएं हमने जरूर आसनसोल स्टेशन पर नई दिल्ली जाते समय इकट्ठी की। (प्रतिनिधि के तौर पर रोहित प्रसाद की रचनाएं दी जा रही हैं।)

आशा है यह अंक आप सबको पसन्द आयेगा।

जितेन्द्र जितांशु

बाढ़

डूबा यह पूरा संसार
ग्लोबल वार्मिंग का है वार
सभी तरफ है हाहाकार
डूबा यह पूरा संसार
मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ा,
बाढ़ का पानी घरों पर चढ़ा
संकट का पहाड़ मनुष्यों पर पड़ा
यूपी, बंगाल और बिहार,
सभी तरफ है हाहाकार,
हे! प्रभु हमें बचाओ,
अब भी समय है,
अधिक से अधिक वृक्ष लगाओ

–रोहित प्रसाद
Mob. : 8759813966
R.M.S. Office, Anansol Station
Dist. Burdwan - 713302(W.B.)

पत्राचार का पता :
सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park,
Kolkata-700 033
West Bengal. India
☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

संपादक मण्डल

उप-संपादक	:	**तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य**
संपादकीय सलाहकार	:	**यदुनाथ सेउटा**
संपादक	:	**जितेन्द्र जितांशु**
विशेष सहयोग	:	**आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।**

युवा कविता

भगवान

भगवान मुझको फेल न करना
एक साल की जेल न करना
आस-पड़ोसी खूब कहेंगे
नहीं पिताजी प्यार करेंगे।
वहीं बेंच वही कमरा
ताने सबके कौन सहेगा
बातों में सहपाठी हँसी उड़ायेगे
ऐसा मुझसे खेल न करना
वही किताबें वही कहानी
होगी मुझको फिर दुहरानी
किसी काम में मन न लगेगा
ऐसा मुझसे खेल न करना
भगवान मुझको फेल न करना
एक साल की जेल न करना।

–प्रभाष प्रसाद
कक्षा - X / A
Naihati Anand Sawroop High School
नैहाटी, उत्तर 24 परगना

आशा की पहली किरण

आओ आशा की पहली किरण बनें हम
दुनियाँ को जगाएँ कुछ इस कदर
कि जो ना उठे वो भी जग जाए झिलमिला कर
रौशनी दे हम उन्हें जो भटक गए हैं राह अपने
कुछ कर दिखाने की आशा हो जिनमे
ऐसा कुछ करे हम
आओ आशा की पहली किरण बनें हम
उगते सूरज से पहले
चिड़िया के गाने से पहले
नींद के खुलने से पहले
आओ मन की नीव को यूँ जोश से भर लें हम
आओ आशा की पहली किरण बनें हम
राहें अनेक हैं पर मंजिल एक है
चलना उस पथ पर है, जिसका मन से मेल है
आखों में भरे इन डबडबाते आँसुओं की कसम
जिन्दगी में कुछ कर दिखाएगें हम
आओ आशा की पहली किरण बनें हम

–काजल कुमारी महतो
कक्षा X/B, Roll No. 46
लाल बहादुर शास्त्री हाई स्कूल

सदीनामा द्वारा जनहित में जारी
मात्र 50/- में चेक कराएं अपने गहने–

A-1 ONE TOUNCH
Computerised X-ray Gold Testing

No. 8B, Kalicharan Ghosh Road
Sinthir More (Opp. Beni Colony Bazar),
Kolkata-700 050, Ph. 033-23520045
Mob.: 08420192262
E-mail: nchkolkata@gmail.com

पूर्वी भारत विज्ञान मेला

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी मेला - 2017

बिड़ला इण्डस्ट्रियल एण्ड टेक्नोलॉजी म्यूजियम (बीआईटीएम) गुरुसदय रोड कोलकाता- 19 ने पूर्वी भारत विज्ञान मेला (विद्यार्थियों के लिए) तथा 16वां विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेला (कॉलेज के छात्रों के लिए) आयोजित किया। यहाँ के तकनीकी अधिकारी गौतम शील ने बताया कि इस वर्ष कुल 343 छात्रों, 153 माडलों, 159 स्कूलों ने इनमें भाग लिया।

इसका उद्घाटन 10 जनवरी को किया गया जो प्रो० अजय कुमार राय, आईआईईएसटी, शिवपुर ने किया। इसके प्रायोजकों में पी.सी. चन्द्रा ज्वैलर्स, केसोराम इण्डस्ट्रीज तथा टीटागढ़ बैगन्स लि० थे।

युवा कविता

वृद्धावस्था

वीरान नहीं
खामोश हैं सड़कें
कोई अनजान नहीं
पर दिल क्यूँ तेजी से धड़के
कोई आनेवाला नहीं
पर इंतजार कर रही पलकें
कोई जाने वाला भी नहीं
पर क्यों बुला रही सड़कें।
जीवन के आखिरी पड़ाव में
इस वृद्धाश्रम की पनाह में
पड़ी जो यह वृद्धावस्था
मर मिट जाये तो
नसीब उन हाथों को
देने के लिए एक कफन भी नहीं।

–सुमी गुप्ता

कक्षा -VIII, Sec.-B, Roll No. - 25
Naihati Anand Swaroop High School

इस साहित्यकार को पहचानिए

हौसले की उड़ान

उसमें उड़ने की चाह बहुत
पंख भी उसमें लगे है
उसके पास हौसले तो है
पर वह जकड़ी है, जंजीरों से

उसे आजाद कर दिया जाये
तो वह उड़ जायेगी आसमान में
बदल देगी वह
पूरे देश के दस्तूर को

आजाद करेगी वह
उन सभी बच्चों को
लेकर आसमान में अपने साथ
जो जंजीर जकड़े थे कभी

उन बच्चों को वह फिर
याद करेंगे उस समय को
जिस समय जकड़े थे उन बच्चों को

अफसोस है उन्हें अपनी गलती का
क्यों जकड़ा था उसने उन बच्चों को
आखिर में उसे महसूस हुआ
अपनी गलती का और समझा कि
हौसले से ही उड़ान होती है।

– प्रिया साव

Mob: 8808203145
कक्षा – IX - B, Roll No. 53
Katadanga North Janata Arya Vidyalaya

युवा कविता

प्यारे पापा

प्यारे पापा सच्चे पापा
बच्चों के संग बच्चे पापा
करते हैं पूरी हर इच्छा
मेरे सबसे अच्छे पापा।

पापा ने ही तो सिखलाये हैं
हर मुश्किल में रह कर सायें
जीवन जीना क्या होता है
जब दुनिया में कोई आये।

उंगली को पकड़कर सिखलाते
जब पहला कदम भी नहीं आते
नन्हें प्यारे बच्चों के लिए
पापा ही सहारा बन जाते।

जीवन के सुख-दु:ख को सहकर
पापा की छाया में रहकर
बच्चे कब हो जाते हैं बड़े
यह भेद नहीं कोई कह पाये।

दिन रात जो पापा करते हैं
बच्चे के लिए जीते मरते हैं
बस बच्चों की खुशियों के लिए
अपने सुखों को भूले हैं।

पापा हर फर्ज निभाते हैं
जीवन भर कर्ज चुकाते हैं
बच्चे की एक खुशी के लिए
अपने सुखों को ही भूल जाते हैं।

फिर क्यों ऐसे पापा के लिए
बच्चे कुछ कर ही नहीं पाते
ऐसे सच्चे पापा को क्यों,
पापा कहने में भी सकुचाते हैं।

पापा का आशीष बनाता है
बच्चों का जीवन सुखदाई
पर बच्चे भूल ही जाते हैं
यह कैसी आँधी है आई।

जिनसे सब कुछ पाये हैं
जिन्होंने सब कुछ सिखलाये हैं
कोटि-कोटि नमन ऐसे पापा को
जो हर पल साथ निभाते हैं

प्यारे पापा के प्यार भरे
सीने से जो लग जाते हैं
सच्च कहती हूँ विश्वास करो
जीवन में सदा सुख पाते हैं।

–नेहा कुमारी साव
कक्षा - XI
Howrah Shiksha Sadan For Girls

क्या आपको लगता है यह पत्रिका नियमित छपनी चाहिए अगर हाँ तो हर तरह के सहयोग के लिए हाथ बढ़ाएं इस माह हाथ बढ़ाने वाले–

मोहम्मद चाँद

युवा कविता

माँ

क्या होती है माँ
जो जीवन की हर राह पर
हमारा साथ दे
हर गम सह कर
हमें प्यार दे
माँ होती है
उस पेड़ की तरह
जो धूप में हमें छाँव देती है
तेज-आँधी से हमारी सदा रक्षा करती है
माँ खुद रहकर भूखा
पर खिलाती है हमको
दुनिया के हर गम सहकर
खुश रखती है हमको
माँ का कर्ज
हम कभी भी न चुका सकेंगे
पर माँ को सदा प्यार करेंगे।....

–फाल्गुनी सरकार
कक्षा - IX, Sec- B, Roll No. 54
लालबहादुर शास्त्री हाई स्कूल

बच्चे उदास हैं!

माँ की आज्ञा अनुसार बच्चे
काम पर जा रहे क्या ?
या मजबूर होकर
पेट भरने के लिए
माँ कभी नहीं चाहती बच्चे काम पर जाएँ
क्या सारे सुख दब गए, काले पहाड़ों के नीचे
क्या किसी दहाड़ में बह गए, पाठशालाएँ
क्या खुशी दब गयी, सारे भूचालों में
तो दुनियां में, बच्चे का क्या!
पर दुनिया में इनके लिए खुशी
बहुत कम के मन से मिलते हैं
भारत के किसी कोने में
बच्चे उदास रहते है, माँ बिना।
उन्हें ज्यादातर घृणा करते लोग

–मो० जाकिर
कक्षा : दसवीं, वर्ग - "ख", क्रमांक : संतानवे
लाल बहादुर शास्त्री हिन्दी हाई स्कूल (उ.मा.)

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद द्वारा नवोन्मेष उत्सव का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद द्वारा आयोजित द्वितीय नवोन्मेष उत्सव आज महानगर की साइंस सिटी में आरम्भ हुआ। इस आयोजन में देश के विभिन्न भागों से आये 34 नवोन्मेषक अपने आविष्कारों के साथ भाग ले रहे हैं।

तीन दिवसीय इस उत्सव का उद्घाटन करते हुए आइ आइ ई एस टी, शिवपुर के डाइरेक्टर प्रो० अजय कुमार राय ने आविष्कारों को देश के विकास की कुंजी बताया। जो देश जितने नये उपादान बनायेगा, वह उतना ही सुदृढ़ होगा – यह कहकर प्रो० राय ने युवाओं से विज्ञान पर अधिकाधिक शोध करके विश्व की समस्याओं के समाधान का पथ प्रशस्त करने का आह्वान किया। परिषद के महानिदेशक श्री ए०एस० मनेकर ने आयोजन में भाग ले रही प्रतिभाओं से कहा कि इस उत्सव के आयोजन का उद्देश्य विज्ञान के आविष्कारों के प्रति युवा-वर्ग को उत्साहित करना है। समाज में आविष्कारों की प्रक्रिया प्रोत्साहित करने के लिए देश भर में 55 नवोन्मेष केन्द्रों का एक नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। इसमें 13 केन्द्रों ने कोलकाता सहित विभिन्न स्थानों पर काम शुरू कर दिया है। समारोह में साइंस सिटी के निदेशक श्री ए.डी. चौधरी भी उपस्थित थे।

युवा कविता

आजाद पंक्षी

काश मैं इन पंक्षियों की तरह होती
खुली, आजाद
कोई ना मुझे डाँटता, ना मुझे मारता
जैसे कि हूँ आज।
कभी कभी तो लगता है,
कि मैं हूँ ही नहीं इस दुनिया में,
और कभी-कभी तो लगता है,
कि खो जाऊँ इस महफिल में।
सुरों के ताल मुझे बुलाएँ, मैं नाचू और वो गाँए
मैं उनमें खो जाऊँ, और वो मुझमें खो जाएँ
और हम दोनों मिलकर इस महफिल को जगायें
ये दुनिया है कैसी जो समझ ना पाए
इन पक्षियों को;
ये तो खुले हैं; आजाद हैं
क्यूँ परेशान करते हो, इन मासूमों को

–तृप्ति सिंह

कक्षा - VIII, Sec. - B
Shri Shishayatan School
कोलकाता

आगे आएं हाथ बढ़ाएं

आपको पत्रिका अच्छी लगी हो तो

- नियमित पढ़ने के लिए – सदस्य बनें
- स्तरीय पत्रिका लगे – रचनाएं भेजें
- पुराने सदस्य हैं - नवीनीकरण कराए
- किसी गतिविधि को बढ़ाना है– हमें लिखें
- कोई असाध्य रोग है– कोलकाता आएं।
- कोई योजना है– हमें लिखें

गंगासागर/पुरी/दार्जिलिंग/सिक्किम/ उत्तर पूर्व जाना है– हमारे विशेषांक पढ़ें।

नींद न आई सारी रात

लोहे-सोने की दुकान थी,
यह धरती, वह आसमान था।
पास-पास थी, बड़ा नाम था,
दोनों पर ही बहुत काम था।

लोहा नित पीटा जाता था
सोना भी थप्पड़ खाता था
लोहा ज्यादा चिल्लाता था
जब-जब वह पीटा जाता था।

एक रात जब सब सोए थे
मीठे सपनों में खो थे
सोना बोला यूँ लोहे से
भैया, क्यों चिल्लाते ऐसे ?

हम दोनों पीटे जाते हैं
मार सदा दोनों खाते हैं
पर तुम ज्यादा चिल्लाते हो
शोर मचाते, झल्लाते हो

लाभ नहीं कुछ चिल्लाने से
लोहा बोला ओ ! दीवाने
तू मेरी पीड़ा क्या जाने
अरे तुझे है गैर सताता
मैं अपनों से पीटा जाता।

बेगाने हैं जब दु:ख देते
हम चुप-चुप उसको सह लेते।
अपने जब पीड़ा पहुँचाते
कभी न हम चुपचुप सह पाते

सोने ने समझी जब बात
नींद न आई सारी रात।

–रिचा मिश्रा

कक्षा - X, Sec. - C, Roll No. - 18
सलकिया श्री हनुमान बालिका विद्यालय, हावड़ा

युवा कविता

अकेला इंसान

इंसान अकेला नहीं रह सकता है।
अकेले मर सकता है।
मिट सकता है।
पर अकेले जी नहीं सकता है।
उसको तलाश रहती है।
जरूरत रहती है।
एक सच्चे दोस्त की,
एक सच्चे हमसफर की,
जो निभा सके,
जो साथ चल सके,
जो भागीदार बने,
सुख-दुख का
पर मिलता है क्या ?
शायद....!!

– मुस्कान गुप्ता
कक्षा XI, Sec. - C
श्री शिक्षायतन स्कूल, कोलकाता

भारत माँ

भारत माता तुझे सलाम
जीना मरना तेरे नाम
हम सब है तेरी संतान
सदा ऊँचा रखेंगे तेरी मान
रोशन करेंगे तेरा नाम।।

चाहे देने पड़े हमें अपना प्राण
झुकने न देंगे कभी तेरी शान
तुझ पर अर्पण कर देंगे हम
अपना तन, मन अपनी जान
तेरी राहों में हो जाएँगे कुर्बान
पर कम न होने देगें कभी तेरी आन!

– संजना मिश्र
कक्षा- VI, Sec.- A, Roll No. 3
सलकिया श्री हनुमान बालिका विद्यालय, हावड़ा

इस साहित्यकार को पहचानिए

विशेष सूचना

सदीनामा, कोलकाता से प्रकाशित होने वाली पत्रिका है। पत्रिका आने वाले महीनों में भारत में सिक्कों का शौक, व्यवसाय, इतिहास पक्षों पर लगातार लेख छापना चाहती है। आपसे एवं आपकी संस्था से आग्रह है कि सिक्कों से संबंधित विषयों पर हमें लेख भिजवाएँ। लेख किसी भी भाषा में हो सकता है हिन्दी में हो तो थोड़ी सुविधा होगी।

पत्रिका सिक्कों की प्रदर्शनी एवं इस शौक के प्रति लोगों के सुझाव के लिए आपके लिखित सुझावों का भी स्वागत करेगी।

जितेन्द्र जितांशु
Mob. : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

युवा कविता

जागृति का संदेश

नारी सशक्तिकरण को मुझे तो जरूरत ही नहीं लगती,
नारी कभी अबला थी ही नहीं।
देखो प्रमुख देवियाँ हैं नारी - लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती।
हर इंसान को जन्म देती है नारी,
सबको पाल-पोस कर बड़ा करती है नारी,
राखी भी जो बांधती है, वो भी है नारी
शादी करके जिसे घर लाता है, वो भी है नारी,
बेटी बनकर खुशियाँ देती है, वो भी तो है नारी
हे इंसान!!
समझ ले तू सच्चाई
न तू अकेला रह सकता,
न ही नई जान को जन्म दे सकता
न उन्हें बड़ा कर सकता
बस तू समझता है अपने आप को नारी से होशियार!
एक बार शब्द की तरफ देखना तो यार!
'नर' और 'नारी'....
देखो–
शब्द में भी एकमात्रा में आगे है नारी!!
बहुत भारी है नारी!
छुपी है शक्ति अंदर सारी
बस एक बार जग जा तू नारी।
सशक्तिकरण तेरा कौन करेगा?
तू ही तो है अपनी भाग्यविधाता।
सोई शक्ति को जगाना,
बस यही है काम तेरा।
सशक्तिकरण को जगाना।

–वर्णिका दुगड़
कक्षा - XII, Sec.- D
श्री शिक्षायतन, कोलकाता

क्लेप्स्टीक इन्टरनेशनल स्टूडेण्ट फिल्म फेस्टिवल

क्लेप्स्टीक इन्टरनेशनल स्टूडेन्ट फिल्म फेस्टिवल में जो विद्यार्थी वहाँ फिल्मों के बारे में सीख रहे हैं जैसे एक्टिंग फिल्म मेकिंग मेकअप फिल्मों के लिए यह कार्य सत्यजित रे संस्थान द्वारा कराया जा रहा है। उसी के अन्तर्गत क्लेप्स्टीक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल समारोह तीन दिन का किया जा रहा है। 27 से 29 जनवरी तक सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में शत्रुघ्न सिन्हा थे। कार्यक्रम की शुरूआत में वन्दना की गई जिसको नीतू ने गाया। इसके संचालक निशांत, श्रेया रावत थे। दीप प्रज्ज्वलित करके मंचासिनों के पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। यह सब 4th बेंच में मंचासीन मुख्य अतिथि शत्रुघ्न सिन्हा, देबरति मित्रा, गौतम घोष, देबु घोष, पंकज सिंह इत्यादि थे। शत्रुघ्न सिन्हा ने युवा कलाकारों को कहा कि आप कभी हार ना मानना नाही निराश होना कभी भी मैं जब फिल्म इण्डस्ट्रीज में गया तब वहाँ किसी को नहीं जानता था। बम्बई भी मेरे लिए नया शहर था पर फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी एक अलग पहचान बनाई। मेरे डायलाग "खामोश" और मेरी आत्मकथा का नाम भी "खामोश" है। आप निराश न होकर हिम्मत न हारें चाहें कितनी विपदा हो और अपनी अलग पहचान बनाए। उसके बाद थियेटर में 7 फिल्मे दिखाई गई जो कि एक संदेश पूर्ण फिल्में थी जिनके नाम इस प्रकार हैं – The allen diveniour, Toutai, Benath love bird, Sex with monk and other story, Fiswitch, Percbed।

– मीनल प्रसाद

इस साहित्यकार को पहचानिए

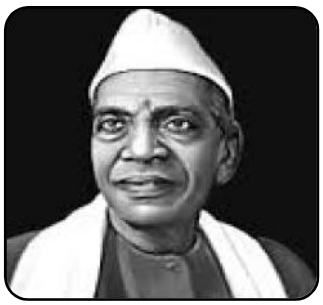

युवा कविता

माँ की महिमा

आँचल में दूध लिए....
आखों से छलकता पानी
सोच रही माँ बैठ सड़क पर
किसे कहूँ यह दुखभरी कहानी ?

बीती रात को बेटे ने उसको
घर से बाहर निकाला
कि सह न सकेगा उसका खर्च
देके अपना हवाला।

न घर है अब कोई मेरा
सोच रही वह कहाँ जाए
किसके घर जाकर के अब वह
अपना डेरा जमाए
बचपन होता तो झूठ बोलकर
लोगों से मैं नजर बचाती
परन्तु इस उम्र के दौर पर
साहस कहाँ से लाएँ ?

भूखे पेट वह चलती रही
किसी 'वृद्धाश्रम' की तलाश में
क्योंकि शहरों में ऐसा
अक्सर होता है।
पढ़ा था उसने किसी किताब में
पहुँचकर आश्रम उसने वहाँ का
द्वार जब खटखटाया
तो हाथ में फार्म पकड़े एक
कर्मचारी बाहर आया
बोला माताजी ये फार्म नहीं
सिर्फ एक औपचारिकता है
घर से बुजुर्गों को बाहर निकालना
आम सा बन गया है।
सुनकर माँ बोली
ये मेरे आँसू नहीं पानी हैं....

बेटा बहुत लायक है
मेरी यही सच्ची
कहानी है
उसने मुझे नहीं निकाला
मैं खुद से चली आयी हूँ

अपने जीवन काल को समर्पित
करने यहाँ आयी हूँ।

–कीर्ति मण्डल
कक्षा - X, Sec. - A
Seth Soorjmull Jalan Balika Vidyalya
कोलकाता

इस साहित्यकार को पहचानिए

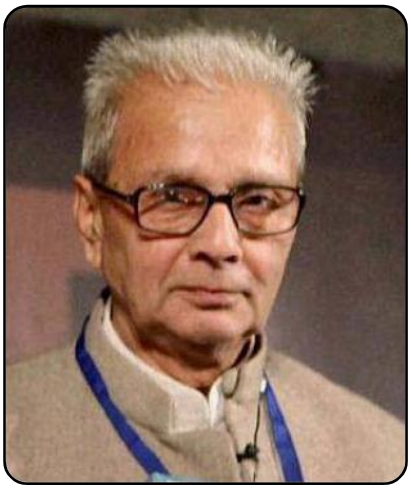

युवा कविता

"आखिर ऐसा क्यों?"

क्यूँ, बेटी के नाम पर परायों को सौंप दी जाती हूँ,
क्यूँ, घर की लाज के नाम पर रोक लगा दी जाती
क्यूँ, दहेज की तराजू में, तौली जाती हूँ
क्यूँ, जीवन के हर मोड़ पर बाधी जाती हूँ
क्यूँ, अपने के साथ रहने पर भी अकेला महसूस करती हूँ

क्यूँ, दुःखों की आँधिया हमें ही, झंझोरती है
क्यूँ, बेटी के नाम पर, परायों को सौंप दी जाती हूँ

क्यूँ, खुले आसमान में, सांस नहीं ले पाती हूँ,
क्यूँ, फूल, काँटे बनके हमें ही चुभते हैं
क्यूँ, धूल जैसे पैरों तले कुचल दी जाती हूँ,
क्यूँ, हमारी चमक कोई नहीं देख पाता,
क्यूँ, हमें कोई अनमोल नहीं समझता है

क्यूँ,बेटी के नाम पर, परायों को सौंप दी जाती
क्यूँ, पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई सहारा नहीं
क्यूँ, समाज के नाम पर साझेदारी कर ली जाती
क्यूँ, बेटी के नाम पर परायों को सौप दी जाती हूँ

–श्वेता साव
कक्षा - X
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय, कोलकाता

सदीनामा के तत्वावधान में

Six Months Translation Course
श्याम बाजार मेट्रो के पास
बुधवार– सायं 6 से 8.30
शुक्रवार – सायं 6 से 8.30
व्यवस्थापिका : **पूजा मिश्रा,**
मो० : 9874254775

आसूँ की एक बूँद सी होती है बेटियाँ

आसूँ की एक बूँद सी होती है बेटियाँ।
पापा की दुलारी और जान से प्यारी होती है बेटियाँ
स्पर्श खुरदरा हो तो रोती है बेटियाँ
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को
दो-दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ

कोई नहीं है दोस्तों एक दूसरे से कम
हीरा अगर है बेटा तो सच-मुच मोती है बेटियाँ
विधि का विधान है यही समाज की है परम्परा
अपने मायके को छोड़कर पिया के घर जाती है बेटियाँ
बहुत चंचल, बहुत खुशनुमा होती है बेटियाँ
नाजुक सा दिल रखती है, मासूम सी होती है बेटियाँ
बात-बात पे रोती है नादान-सी होती हैं बेटियाँ

है रहमत से भरपूर खुदा की रहमत है बेटियाँ
घर भी महक उठता है जब मुस्कुराती है बेटियाँ
होता है अजीब सा महसूस, जब छोड़ के चली जाती है बेटियाँ
घर लगता है सूना-सूना कितना रूला जाती है बेटियाँ
माँ-बाप का साथ हर पल निभाती है बेटियाँ
घर में खुशहाली हर पल करती है बेटियाँ
तमाम परेशानियाँ झेलकर खुश रहती हैं बेटियाँ

घर में उजाला ना हो अगर ना हो बेटियाँ
वो घर नहीं विराना है जिसमें ना हो बेटियाँ
नसीब भी बुलन्द होते हैं उनके जिनकी होती हैं बेटियाँ
कुह कुह कुह सी हर पल गूंजता है आशियाना
खामोशियों को दूर भगाती है बेटियाँ

–सोनम कुमारी
कक्षा - X
सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय, कोलकाता

युवा कविता

दीप से दीप जलाओ

आज दीप से दीप जलाओ
दीपों का त्योहार मनाओ
फिर से दिवस सुहाना आया
लहरों जैसा मन लहराया
दिवाली की धूमधाम से
मन भी फूला नहीं समाया
फूलों जैसे हंसो हंसाओ
दीपों का त्योहार मनाओ
भीतर बाहर जगमग सारा
चारों तरफ हुआ उजियारा
दीपों से घर सज गये सारे
कितने सुन्दर कितने न्यारे
फूलझरी और अनार छुड़ाओ
दीपों का त्योहार मनाओ
सजे हुए बाजार चहकते
घर-घर बंदरवार महकते
फूलझड़ियों की चमक देखकर
बच्चे चारों ओर फुदकते
हंसी-खुशी के गीत सुनाओ
दीपों का त्योहार मनाओ

–रोहित कुमार राम
कक्षा – VIII, Sec. -B, Roll No. 2
संत रविदास हाई स्कूल

इस साहित्यकार को पहचानिए

हमारा प्यारा शहर

सबसे प्यारा सबसे न्यारा
कोलकाता है शहर हमारा
जाति-पाति का भेद भुलाकर
सभी धर्म ने इसे दुलारा
काली दुर्गा और शंकर
इस शहर में बसते हैं
अमीर हो या गरी
बंगाली हो या बिहारी और पंजाबी
सभी यहाँ प्रेम से रहते हैं
पश्चिम बंगाल की राजधानी
सभी शहरों की ये रानी
शहरों में है शहर हमारा
कोलकाता हम सबको प्यारा

– खुशबु पोद्दार
कक्षा - VII-B, Roll No. 27
Ph. 9681873326
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय

इस साहित्यकार को पहचानिए

युवा कविता

अनाथ

हमारा क्या दोष है कि
हम अनाथ हैं ?
ना ही माता पिता का साथ है
ना ही भगवान का सर पर हाथ है
केवल ईश्वर ही हमारे नाथ हैं
जोर जुलम सहने पर भी
ना ही कोई पास है,
ना ही कोई साथ है।
हमारा क्या दोष है कि
हम अनाथ हैं ?
कभी रास्ते पर फेंक दिए जाते हैं,
कभी मतलब में बेच दिए जाते हैं।
कुछ भी हो
बस हमारी जिन्दगी बरबाद है
बेटी हो तो धित्कारते है
बेटा हो तो फूलों को तारते है
सभी का तो जैसे
दु:ख से गहरा साथ है
हमारा क्या दोष है कि
हम अनाथ है ?
अनाथालय में भी चैन नहीं
ये तो मन की बात है
हिमालय से भी ऊँचा
हमारे हृदय का आघात है
क्यों छोड़ दिया हमें
घुट-घुट के जीने को
सड़को पर भीख मांगना
ये तो शुरूआत है
हार नहीं मानेंगे
हम जीत कर दिखाएगें।
बड़ा होकर शायद कुछ बन ही जाएगें
फिर बाद में पछताओगे तुम
कि माता-पिता होना कितनी बड़ी बात है।
बस यही तो हृदय की मुराद है
हमारा क्या दोष है कि
हम अनाथ हैं ?

– मधु पाण्डे
कक्षा - IX, Sec. B
फतेहपुर हिन्दी नागरिक प्रचारक विद्यालय, कोलकाता

फोन करें
182
अगर ट्रेन में खतरा लगे
सदीनामा द्वारा जनहित में जारी

इस साहित्यकार को पहचानिए

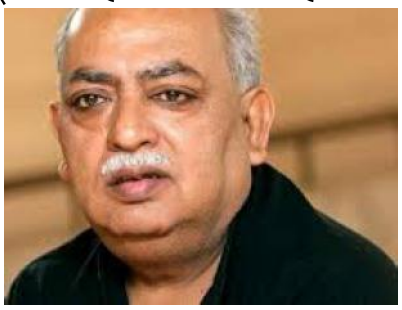

विज्ञापन दरें :

पूरे देश के लिए एक समान

साईज		रु०
पूरा पेज	-	8000
आधा पेज	-	5000
एक चौथाई	-	3000

1 कॉ. × 1 से.मी. 250

युवा कविता

पेड़ न काटो

पेड़ न काटो, पेड़ न काटो,
पंछी बोल रहे हैं।
पेड़ बिना हम कहाँ रहेंगे ?
नीड़ हमारे कहाँ बसेंगे ?
उड़-उड़कर जब थक जायेंगे
शरण कहाँ फिर हम पायेंगे
पेड़ों से ही है हरियाली,
पेड़ों से ही है खुशहाली
शहर हो रहे पेड़ से खाली
सूरत होगी अब उनकी काली
अपना सुख न सोचो प्यारे
हम हैं सच्चे दोस्त तुम्हारे

कहाँ खो गया भारतवर्ष

क्या यही है मेरा भारतवर्ष ?
कहाँ गई इसकी मर्यादा, कहाँ खो गया वो गौरव हर्ष
भ्रष्टाचार, अत्याचार, अनाचार और दुराचार
अब यही है आचार-विचार
क्यों हुए मन इतने गंदे
इतना अभाव ये भेदभाव, सहे अनेको द्वेष-दंगे
क्यों दयनीय है भिक्षुक इतने
मन है व्याकुल, इच्छुक कितने
नेता हुए हैं सत्ताधारी, पूँजीपति है शोषणकारी
अधिकारी तो अधिकारी, यहाँ चपरासी भी है भ्रष्टाचारी
कहाँ थे कितने आगे हम, कहाँ हो गये पीछे इतने
करने हैं काफी काम बड़े
ऊँचाईयाँ छू सके जितने
चाहिए एक नेता ऐसा, जो न हो सत्ता का भूखा
आये जो बनकर मेहतर
करे देश को दुनिया से बेहतर।

–आकाश महतो, कक्षा - X
संत रविदास हाई स्कूल
टेंगरा, कोलकाता

प्यारा हिन्दुस्तान

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
बौद्ध, जैन सब एक समान
हम सारे हैं भाई-भाई
घर सबका है हिन्दुस्तान।
राम, मोहम्मद, नानक, ईसा
जिन्हें भी हम माने भगवान
सदा हमें वे ज्योति दिखाए
करुणा, प्रेम, दया, वरदान
दंभ द्वेष व भेदभाव से
गिरता है मानव का मान
जो भी इसके जाल में उलझा
खो बैठा अपना सम्मान
जाति, धर्म, भाषा का झगड़ा
सुलग रहा है हिन्दुस्तान
मिल जुलकर है हमें बचाना
जिनसे देश न खो दे प्राण
अश्फाक व सुभाष का भारत
रहा सदा एक पुण्य स्थान
गुरु गोविन्द व रामकृष्ण ने
दी भारत को एक पहचान
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई
भेद-भाव का नहीं स्थान
धर्म, जाति में इन्हें जो बांटे
उसे समझे जयचन्द समान
यह भारत है नन्दन कानन
जिसमें सब रहे फूल समान
अनेकता में जहाँ एकता
वह है अपना हिन्दुस्तान

–कार्तिक साव
कक्षा - VIII, Sec.-B
संत रविदास स्कूल, टेंगरा, कोलकाता

युवा कविता

बेटी जल्दी से तू आना

राह देखता तेरी बेटी, जल्दी से तू आना,
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना
ना चाहूँ मैं धन और वैभव, बस चाहूँ मैं तुझको,
तू लक्ष्मी, तू ही शारदा, मिल जाएगी मुझको,

सारी दुनिया है एक गुलशन, तू इसको महकाना,
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना,

बन कर रहना तू गुड़िया सी, थोड़ी सी इठलाना
ठुमक-ठुमक कर चलना घर में, पैजनिया खनकाना
चेहरा देख के तू शीशे में, कभी-कभी शरमाना
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना

उंगली पकड़ कर चलना मेरी, कांधे पर चढ़ जाना,
आंचल में छुप जाना माँ के, उसका दिल बहलाना,
जन्म-जन्म से रही ये इच्छा, बेटी तुझको पाना,
किलकारी से घर भर देना, सदा ही तू मुस्काना।।

–जया तापड़िया
कक्षा - XII,
शिक्षायतन स्कूल

मैंने देखा ही नहीं

मैंने देखा ही नहीं, रंगों से रंगी दुनिया को
मेरी आँखें ही नहीं, ख्वाबों के रंग सजाने को
कौन आएगा, आखों में समाएगा, रंगों के रूप को दिखाएगा
रंगों पे इठलाने वालो डगर मुझे दिखाओ जरा
चल सकूं मैं भी अपने पग से, रौशनी मुझे दिलाओ जरा,
ये हकीकत है कि, क्यों दुनियां है खफा मुझसे,
मैंने देखा ही नहीं।

जान जाएगा वो दिन आएगा, आँखों से बोल के कोई समझाएगा
रंगों को खेलने वालों,
रौशनी मुझे दिलाओ जरा
देख सकूँ मैं भी

खुशियों को आँखों में रौशनी दे जाओ जरा
ये हकीकत है कि, क्यों दुनिया है खफा मुझसे
मैंने देखा ही नहीं।

– अकिला खानम्
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ विद्यालय

तिरंगा अगम काव्य संगम द्वारा काशीपुर आयुष क्लब में कविगोष्ठी आयोजित

तिरंगा की अगले महीने की काव्य गोष्ठी 26 फरवरी को

रविवार 29 जनवरी को तिरंगा अगम काव्य संगम की मासिक काव्य गोष्ठी काशीपुर स्थित आदर्श युवक संघ (आयुस) के संयुक्त तत्वावधान में जनाब दायम गव्वासी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कलकत्ते के मशहूर शायर जनाब हलीम साबिर मुख्य अतिथि थे। विशिष्ठ अतिथि थे श्री योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन', जितेन्द्र जितांशु और हीरालाल साव। काव्य पाठ करने वाले कवि एवं शायर थे श्री नन्दलाल रोशन, शम्भुलाल जालान 'निराला', रणजीत भारती, जगेश तिवारी, जीवन सिंह, नवीन सिंह, मीनाक्षी सांगानेरिया, जतीब हयाल, राम शिरोमणि उपाध्याय 'पथिक' जनाब अशरफ याकूबी, मो० चाँद, युनूस सहर, डॉ० युनूस आरजू, सोहेल खान सोहेल, युसुफ अख्तर, महबूब अकबर, वदूद आलम, अफ्फाकी, मुज्तर इफ्तेखारी, शमीम सागर, डॉ० जमील हैदर 'शाद, एडवोकेट शकील गोडवी, अम्बर सिद्दिकी एवं अन्य। गोष्ठी का सफल संचालन रणजीत भारती जी ने किया संयोजक शम्भुलाल जालान निराला ने गोष्ठी के अन्त में सभी को धन्यवाद दिया। चार घण्टे चली गोष्ठी बहुत ही कामयाब रही, सुनने वालों की संख्या अधिक थी।

युवा कविता

अजन्मी बेटी का दर्द

मैं हूँ एक अजन्मी बेटी
करती हूँ एक सवाल
कलयुग में माँ की ममता का
ये क्या हो गया हाल

कल तक जो बेटी की खातिर
जान देती थी बार-बार
आज जन्म के पहले ही
बेटी को देती है मार

अगर होता रहा यूं कत्ल मेरा
कई रिश्तों से चुक जाओगे
पूछ रही हूँ सब भाइयों से
तुम राखी किससे बँधवाओगे

समाज के इस असूल से
दुनियां खत्म हो जायेगी
झाँसी की रानी फिर पैदा न होगी
न कोई इन्द्रा बन पायेगी

मैं एक फूल हूँ
मुझे खिलने दो
धरती पर आके
इस जीवन से मिलने दो

एक आखिरी सवाल करती हूँ
माँ मेरी प्यारी
तुम मेरी जन्मदाता हो
या फिर हो मेरी हत्यारी

–अमन कुमार साव
कक्षा - VII-A, Roll No. 10
Mob. 7278787373
Katadanga North Janta Arya Vidyalaya (H.S.)

भारत देश है प्यारा

भारत देश है प्यारा
सभी देशों से है न्यारा
यहाँ की छोटी-छोटी गलियाँ
जैसे हिमालय से निकली नदियाँ
यहाँ की सुबह की बेला
रंग-बिरंगे फूलों की मेला
भारत देश है प्यारा
सभी देशों से है न्यारा
यहाँ सभी की एक पुकार
शिक्षा है सबका अधिकार
यहाँ के खेत-खलिहान,
बढ़ाते किसानों की मुस्कान
भारत देश है प्यारा,
सभी देशों से है न्यारा
यहाँ के छोटे-छोटे बच्चे
बहुत ही शरारती और होते सच्चे
यहाँ की मिट्टी में ऐसी शक्ति
जो छोटे बच्चे में भर दे देश की भक्ति
भारत देश है प्यारा
सभी देशों से है न्यारा

–इन्द्रजीत सिंह
कक्षा : X-A, Roll No. 28
Mob. : 9903054865
Katadanga North Janta Arya Vidyalaya

युवा कविता

माँ

सबसे प्यारी मेरी माँ
सबसे सुन्दर मेरी माँ
सबका ध्यान रखती माँ
अच्छा संस्कार देती माँ
सबसे अच्छी मेरी माँ

बेटी

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
उसको उसका सम्मान दिलाओ
हर किसी की होती माँ
हर किसी की होती बहन
बेटी ही होती है जननी
बेटी ही है सबकी शान
पापा की तो होती जान
मम्मी की होती है प्राण
बेटी है समाज की शान
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

–कोमल प्रसाद
कक्षा VI-A, Roll No. 75
सलकिया श्री हनुमान बालिका विद्यालय, हावड़ा

ममता की देवी

मेरा इंतजार करना माँ
जीवन के हर राह पर मेरा साथ देना माँ
तेज आँधी से मुझे लगता है डर माँ
कहीं टूट न जाए मेरे सपनों का घर माँ
पापा से पाया सम्मान
आपसे पाया प्यार
सारी दुनियां से लड़कर
सारी कठिनाइयों से जूझकर
करती हो हमारा देख-भाल
तुम हो ममता की देवी
तुम हो ममता की मूर्ति
तुमने किया सदा हमारा देखभाल
करती हो भूल-चुक माफ
मेरा इंतजार करना माँ।....
सदा दिया है तुमने हमारा साथ
न चुका पाएँगे तुम्हारे प्यार का
लेकिन सदा करेंगे तुम्हारा सम्मान
और सदा करेंगे तुमसे प्यार
मेरा इंतजार करना माँ।।...

–काजल पाण्डे
वर्ग - X, Roll No - 14
लाल बहादुर शास्त्री हाई स्कूल

विज्ञापन

सोच के इजाफे की पत्रिका, मुश्किल हो रहा है इतनी प्रतियां छापना
सोलह वर्ष तक नियमित आप तक पहुँचाने का अनवरत काम

यह पत्रिका विज्ञापन विहीन पत्रिका लग रही होगी। असल में हमें विज्ञापन नहीं मिलते। इसका कारण हमारी कोई विज्ञापन नीति नहीं। कुछ विज्ञापन आ भी जाते हैं। हम जब भी विज्ञापन की परख/सत्यता की बात करते हैं, हमें विज्ञापन नहीं मिलते। दिक्कत ये आ रही है कि सदस्यों को नियमित भेजते समय जितनी कापियाँ भेजनी पड़ रही है उतने की पूंजी में दिक्कत आ रही है अतएव हम अपनी हाल सुधार के लिए अगले एक वर्ष तक नई सदस्यता बंद कर रहे हैं। क्षमा याचना सहित–

पुराने सदस्यों का सदस्यता का नवीनीकरण
30 मई तक खुला है।

जितेन्द्र जितांशु
जितेन्द्र जितांशु
सम्पादक : सदीनामा

युवा कविता

भारत के बच्चे

हम हैं भारत के बच्चे
करे हमेशा काम महान
चाहे जितनी आए बाधाएँ
फिर भी कभी नहीं घबराएँ
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
हम सब का है खून समान।
करें हमेशा काम महान
हम है भारत के बच्चे
कष्टों से लड़ना सीखे हम
स्वतंत्र, बने हम वायु जैसा
नदियों से बहना सीखे हम
फूलों से हँसना सीखे हम
धरती से सहना सीखे हम
बादल-सा दे जल, दान हम,
करे हमेशा काम महान
हम हैं भारत के बच्चे।।

–श्वेता कुमारी साव
कक्षा - X, Sec. B
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय

चाँदनिया

वो देखो पूनम का चाँद
धरती के सिर पर सजा
बदरा के आँचल में छुपा
वह चाँदी की कटोरी सा दिखा।
देख उसके चेहरे का वो तेज
देख उसके तेज का वो प्रकाश
दिल को भा गई,
पूरनमासी की वो रात।
जब मैंने उससे आँखें मिलाई
मानो मुझे देख उसकी चंचल आँखें मुस्काई,
फिर, उन तारों से पूछ लिया मैंने
उसकी उस मनमोहक मुस्कान का राज।
उसके तेज से मन में जलन सी उठी
उसके प्रकाश से दिल में उमंग सी उठी
मन ही मन में ठान लिया था मैंने
एक दिन जाना है उसके पास
पलकें उठीं और आँखों में देखा
जाने कहाँ गुम हो गया खूबसूरती का सरताज
काली बदरा की घरघराहट ने सुनाया
रिमझिम सुरों का साज।

–स्नेहा कुमारी रॉय
कक्षा - X-F
श्री शिक्षायतन स्कूल

साहित्यकार को पहचानिए (उत्तर)

पृष्ठ संख्या 4 : प्रयाग शुक्ल
पृष्ठ संख्या 8 : अशोक वाजपेयी
पृष्ठ संख्या 9 : मैथिली शरण गुप्त
पृष्ठ संख्या 10 : केदारनाथ सिंह
पृष्ठ संख्या 12 : उदय प्रकाश, मृदुला गर्ग
पृष्ठ संख्या 13 : मुनव्वर राना

आप अपनी रचनाएं भेजें

48/49 -A स्वीस पार्क
कोलकाता- 700 033
☎ : 9231845289, 2470-4061
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

युवा कविता

तितली और कली

हरी डाल पर लग हुई थी।
नन्हीं सुन्दर एक कली।
तितली उससे आकर बोली।
तुम लगती हो बड़ी भली।
अब खोलो तुम आँखे।
खोलो और हमारे संग खेलो।
फैले सुन्दर महक तुम्हारी।
महके सारी गली-गली।
कली छिटककर खिली रंगीली।
तुरन्त खेल की सुनकर बात।
साथ हवा के लगी भागने।
तितली छूने उसे चली।
हरी डाल पर लगी हुई थी।
नन्हीं सुन्दर एक कली।

–जूली कुमारी साव
कक्षा - VII - B, Roll No. 22
सलकिया श्री हनुमान बालिका विद्यालय, हावड़ा

अगर मैं चिड़िया की तरह उड़ पाती

काश अगर मैं चिड़िया की तरह
उड़ पाती तो खूब ऊँचा उड़ कर उस
आसमान को छू लेती उड़ने में खूब
पसंद करती आसमान से हर चीज
नीली, हरी और रंगीन दिखाई देती है
उड़ते समय मैं अपनी पसंद के गीत
गाती, एक चिड़िया का मतलब
यह नहीं है कि उसे पिंजरे में
डाला जाए अगर मेरे पंख होते
तब मैं आसमान में काफी ऊपर जाती
कास अगर मैं चिड़िया की तरह
उड़ पाती तो खूब ऊँचा उड़कर उस
आसमान को छू लेती।

– नन्दिनी कुमारी कोरी
कक्षा - VI-B, Roll No. 96
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय

आपकी चिरपरिचित स्नेहाकांक्षी और सहयोगी पत्रिका "सदीनामा" बहुआयामी, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक राजनीतिक आदि विभिन्न मुद्दों को समय-समय पर उठाती रही है जो कोलकाता ही नहीं वरन अखिल भारतीय स्तर पर सेतु-संवाद का वाहक बना है। इस क्रम में हमने निर्णय लिया है कि आज के दौर में सीमित हो रहे साहित्यिक सांस्कृतिक संदर्भों के बीच पुस्तक समीक्षा गायब होती जा रही है और आलोचनात्मक विवेक पूर्वाग्रह और गुटों से संचालित। हम पुस्तक समीक्षा का कालम नियमित रूप से शुरू करने जा रहे हैं। देश के सभी प्रकाशकों, लेखकों से आग्रह है कि "सदीनामा" के लिए समीक्षार्थ पुस्तकें "सदीनामा" के पते पर भेजें। अगर कोई ई-पुस्तक, ई-मैगजीन हो तो उसे brajmohansingh450@gmail.com, मोबाइल- 9831770876 पर भेजें। डाक से भेजने का पता–

48/49A, Swiss Park, Kolkata - 700 033

मीनल - 8296808103

स्वरचित कविता उत्सव खण्ड - दो
(विद्यालय विशेष की कविताएँ)

विद्यालय की ओर से - एक

फतेपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय, फतेपुर क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए लगभग 49 वर्षों से शिक्षा का केन्द्र रहा है। समय-समय पर अन्य विद्यालयों की भाँति यहाँ भी विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। विद्यार्थियों में सुप्त प्रतिभाएँ होती ही हैं। हमारे विद्यालय के विद्यार्थी भी इसका अपवाद नहीं हैं।

यह जानकर मुझे अपार हर्ष हुआ कि 'सदीनामा' द्वारा हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों की लेखन क्षमता को प्रोत्साहित किया जा रहा है। साहित्य के माध्यम से हमारे बच्चे अपने मन के विचारों को प्रकट कर पाएंगे। बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए मैं सदीनामा की सराहनीय भूमिका के लिए आभार प्रकट करता हूँ।

– जय प्रकाश गुप्ता, प्रधानाध्यापक
फ.हि.ना.प्र. विद्यालय, फतेपुर, कोलकाता

विद्यालय की ओर से - दो

प्रतिभा उम्र की मोहताज नहीं होती, जरूरत है उसे निखारने की। मैं धन्यवाद देना चाहूँगी 'सदीनामा' के इस प्रयास को जिन्होंने प्रतिभाओं को चुनने की बीड़ा उठाया है। इसी संदर्भ में पता चला कि हमारे विद्यालय फतेपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय में भी काफी प्रतिभाएं हैं।

उनकी लिखी कविताएं सराहनीय हैं एवं एक शिक्षिका होने के नाते मुझे उन पर गर्व है। उनके उन्नत भविष्य की ईश्वर से प्रार्थना है।

–अनिता कुमारी गुप्ता, सहायक अध्यापिका
फतेपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान
सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSE CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
Phone No. For SMS To Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS

युवा कविता

मदिरा

मदिरा पीकर आदमी होते हैं मदहोश
लेकिन हमलोग इसका क्यों
करते नहीं विरोध
मदिरा पीकर आदमी क्यों
करते स्त्री पर अत्याचार
फिर भी क्यों स्त्रियाँ
सह लेती इनकी मार
नहीं लाज है नहीं शर्म है
सुन लो मेरे देश की नारी
मदिरा पीकर आदमी होते हैं मदहोश
न ही बल है न ही बुद्धि
दोनों ये गँवा बैठे
फिर भी कोई साहस नहीं करता,
करता नहीं विरोध
मदिरा पीकर आदमी होते हैं मदहोश
लेकिन हमलोग इसका क्यों
करते नहीं विरोध

–मनिषा कुमारी राय
कक्षा- VIII-B, Roll No-1
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय
Mob.: 8961353513

कविता

(1) मनुष्य हो तो ऐसा हो जो लिखे
अपनी अच्छाई से भरी सुनेहरी कहानी
इस पृथ्वी के नियमों का वह पालन करे
और ना करे मनमानी।

(2) पेड़ों को ना नष्ट करो
ना बढ़ाओ गंगा में गंदा पानी
दूषित हो रही है अपनी यह
धरती अब तो सम्हल जाओ सभी प्राणी

(3) मन के आँखों से जब देखो
पृथ्वी की सुन्दरता को, तो
लगेगी यह पृथ्वी सुहानी
जो इस धरती को अपना माने
उसे यह सुनाती अपनी कहानी..।

–शेख फिरोज
कक्षा - XII, Roll No.-38
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय
Mob. : 9748226986

दुनियां

हर समय हमे गलत
साबित किया जाता है।
क्यूँ आखिर हमें और उनमें
क्यूँ फर्क रखा जाता है।
क्या जिन्दगी सिर्फ लड़कों से
चलती है लड़कियाँ क्या कभी
कुछ नहीं कर सकती।
ऐसी दुनिया से अच्छा है
हमारे खुद की एक दुनिया होती।
जिसमें सिर्फ लड़कियाँ होती
बन सकती है वह जो उसकी इच्छा
सपने देखने का सबको है अधिकार
मत छिनो हमसे हमारे ये
सपनों को हमसे है ये दुनिया।

–रजनी गुप्ता
कक्षा - IX-B, Roll No. 17
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय
Mob. : 8100492419

वातावरण

वातावरण को दूषित
करके तुम स्वस्थ
नहीं रह पाओगे
स्वच्छ हवा न
ले पाए तो घुट-घुट
कर मर जाओगे

आओ मिलकर कसम ये
खाओ प्रदूषण को दूर
भगाओ गंदगी को दूर
भगाकर वातावरण को
स्वच्छ बनाओ

–बसंत पाण्डेय
कक्षा - VI-A, Roll No. -59
हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय
मो० : 8013341387

सरकार क्यों नहीं करती न्याय?

बाहर निकलो तो भीड़ देखो
कहीं पुरुष कही स्त्री देखो।
पुरुष करते हैं अन्याय
सरकार क्यों नहीं करती न्याय।

बाहर निकलो तो शराब के दुकान देखो
कहीं बीड़ी की दुकान तो कहीं तम्बाकू की दुकान
इनसे होता है शरीर खराब
सरकार क्यों नहीं करती न्याय।

बाहर निकलो तो पानी की बरबादी देखो
कहीं पानी गिरता हुआ तो कहीं नल चालू देखो
लोग यह समझते क्यों नहीं कि पानी भविष्य में
खत्म होने वाला है, सरकार क्यों नहीं करती न्याय।

जिन वीरों ने हमें आजादी दिलायी
हम उसे सम्मान नहीं करते हम उन्हें सम्मान
देने की बजाय हम उन्हें गालियाँ देते हैं क्यों
सरकार क्यों नहीं करती न्याय।

–शुभम यादव
कक्षा - V, Roll No -8
फतेहपुर नागरी प्रचारक विद्यालय
Mob. : 7890340883

नीम का पेड़

नीम का पेड़ सबको छाया देता
यह सबको दतुवन देता
नीम के पेड़ से सब प्यार करते
यह तो थोड़ा कड़वा होता
नीम का जैसा कोई नहीं
नीम तो सब पेड़ से प्यारा है
यह तो सब पेड़ से निराला है
नीम का पेड़ की पूजा होती
क्योंकि उनपर देवी रहती
नीम तो सब पेड़ों से मशहूर है
क्योंकि नीम जहाँ-तहाँ है मिलता
नीम का पेड़ पर फल उगता
लेकिन उन्हें कोई नहीं खाता
क्योंकि वह बहुत कड़वा होता
इसलिए उन्हें कोई नहीं खाता।

पक्षी

पक्षी तो होता है बड़ा आजाद
पक्षी तो होता है बड़ा आजाद
इनको कोई न रोक पाये
पक्षी का मन जहाँ चला जाये
यह तो होता है सबसे निराला

पक्षी तो होता है सबसे प्यारा
यह अपना घोसला खुद ही बनाता
यह अपने बच्चों को खुद ही पालता
पक्षी के जैसा कोई नहीं
पक्षी तो चुलबुत होता है
यह तो मस्तमौला होता है
पक्षी तो बहुत अच्छा होता है
यह तो सबसे प्यार करता है
पक्षी तो होठों की मुस्कान है
पक्षी तो हवा की पहचान है।

–पल्लवी सागर चौधरी
कक्षा- VII-B, Roll No. 34
Phone : 8961620096
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय

अंधकार

अंधकार जगहों पर,
प्रेम की दिया बार दो।
सुबह का इंतजार मत करो,
मिज जाने दो अंधकार को।।
भूल जाओ उन कष्ट को,
जो सताया था अंधकार ने।
नव युग से बहुत सताया
अंधे को अंधकार ने।।
अंधकार को मिटायेंगे
बढ़ायेंगे अपने प्यार को।
बहुत अत्याचार किया
अंधे पर अंधकार ने।।
आ प्रेम से दिया बार दो
मिट जाने दो अंधकार को
आ प्रेम से गले लग जाये
भूल जाये उन इतिहास को।।

– प्रियंका राय
कक्षा - VI-B, Roll No. 8
Mob. : 9007789121
फतेहपुर नागरी प्रचारक विद्यालय

अंधी सोच

मानव की अंधी सोच
ऊँच-नीच पर देते ध्यान
मानव को बहुत अभिमान
छोटे वर्ग के लोगों का कभी नहीं देते ध्यान
यह अपने को मानते हैं महान
मानव को बहुत अभिमान
छोटे-छोटे बातों पर छोटे वर्ग लोगों को
करते परेशान
छोटे वर्ग के लोग अपने काम पर
देते ध्यान
इसलिए छोटे वर्ग के लोगों पे
मुझे है बहुत अभिमान
वह अपने काम से देश का करते है सेवा
बिना उम्मीद की मिलेगा मेवा
वह करते हैं मानव की सेवा
तब पर भी कभी नहीं जाता है उनपर ध्यान
सरकार से हमें है यह मांग इनको भी दे
बराबर का सम्मान।

–रूपम कुमारी
कक्षा - VII - B, Roll- 7
फतेहपुर हिन्दी नागरी प्रचारक विद्यालय
Ph. : 9038386104

सम्मान समारोह

महियसी, मानवतावादी, लोकमाता भगिनी निवेदिता का 150 वां जन्म-दिवस मनाया गया

बंग प्रमिला कृति रत्न सम्मान -2017 प्रदान उत्सव/समारोह

आयोजक : इण्डियन फोटो एंड कल्चरल लवर्स वेलफेयर फाउंडेशन, इंडियन फ्रीलांस जर्नलिस्ट एंड फोटोग्राफर वेलफेयर फाउंडेशन

इंडियन फोटो एंड कल्चरल लवर्स वेलफेयर फाउंडेशन और इंडियन फ्रीलांस जर्नलिस्ट एंड फोटोग्राफर वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में आशुतोष मुखर्जी के भवानीपुर स्थित निवास के आशुतोष मुखर्जी स्मृति भवन में 10 जनवरी मंगलवार, भगिनी निवेदिता की 150 वीं जन्म शताब्दी को स्मरणीय बनाए रखने के लिए बंगाल की महान किंवदंती प्रमिला दे की अमर सृष्टि को विश्वस्त्र पर लाए जाने के लिए बंग प्रमिला कृति रत्न सम्मान - 2017 प्रदान किया गया। श्रद्धांजलि अर्पण और सम्मान प्रदान समारोह का दीप प्रज्वलन।

इसके अलावा चेयरमैन रीना हाळदार, दीपक लाहिरी, विजय सेठ, दुर्गा पाल, देव प्रसाद, डली सेठ, रबीन दास, दिलीप काया, वकील प्रदीप बड़ाल प्रमुख थे।

उद्घाटनकर्ता चेयरमैं रीना हाल्दार ने किया, भगिनी निवेदिता की स्मितियों को जीवंत बनाए रखने के लिए किए गए प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा होनी चाहिए, साथ ही कुसंस्काराच्छन्न स्त्री जाति जैसे कुवांरियों विवाहितो, विधवाएँ प्रमिलाओं को अंधकार से प्रकाश में लाने के लिए निवेदिता के आत्मनिवेदन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।

सभापति विजय सेठ ने कहा, भगिनी निवेदिता विवेकानन्द-रामकृष्ण की शिष्या ही नहीं थी बल्कि वे भक्ति और दर्शन के प्रति आस्थावान गैर भारतीय होने के बावजूद भी भारतीय स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी थीं, इस विषय की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया।

वकील प्रदीप बड़ाल ने कहा अभारतीय/गैरभारतीय होने के बावजूद भी निवेदिता ने मानव सेवा के लिए प्रेरित किया जिसका वर्तमान समय में अभाव देखने को मिलता है। साथ ही स्वामीजी के अपूर्ण कार्यों को पूरा करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थी। इसलिए इस वर्ष भगिनी निवेदिता के जन्म शताब्दी को स्मरणीय बनाए रखने के लिए संस्था द्वारा स्त्री जाति को सम्मानित करने हेतु बंग प्रमिला कृति रत्न सम्मान प्रदान करने का आयोजन किया गया इस तरह के कार्यों के लिए एकजुट हो, जाति धर्म की भावना से परे हो सभी को आगे आने की बात कही।

आज के इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थित लोगों में रबीन दास, बीथिका मंडल, दुर्गा पाल, प्रियदर्शनी शर्मा, अभिनेत्री/नायिका कल्पना पालित, चितरंजन मंडल, कविता भट्टाचार्य, डॉली सेठ, उमा पाल चौधुरी, दीपिका मंडल, चंद्रानी राय, दिलीप थापा प्रमुख थे।

आज संजीव कांजीलाल द्वारा संपादित माटी खोबोर समाचार पत्र का लोकार्पण अध्यापक मनोरंजन घोष, रीना हालदार, वकील प्रदीप बड़ाल, विजय सेठ, राबीन दास, चितरंजन मंडल, द्विजन मंडल द्वारा किया गया।

आज के इस कार्यक्रम में तिन्नी दत्ता, चंपा रायचौधरी, चंद्रानी राय, शिवानी विश्वास, नारायणी दत्त, रीना हालदार, सीमा दत्त, सपना टीकादार सहित 10 लोगों को बंग प्रमिला कृति रत्न सम्मान 2017 से सम्मानित किया गया।

पूरे समारोह के प्रबंधक संचालक और परिचालक सभापति विजय सेठ थे, आह्वाहक के रूप में डाली सेठ, उमा पाल चौधरी, देव प्रसाद पाल, कविता भट्टाचार्या और संपादक प्रदीप बड़ाल की प्रमुख भूमिका रही।

यह जानकारी हमें विजय सेठ-8334001538 ने दी तथा इसका बंगला से अनुवाद राहुल शर्मा ने किया।

खोज-खबर

नेताजी की धरोहर उपेक्षित क्यों ?

पैतृक आवास पर पड़ा है ताला

23 जनवरी कोदलिया से लौटकर **आलोक कुमार शुक्ल** 7890714410

भारतीय इतिहास की विडम्बना ही है कि आज भी उसकी आजादी के शूरमाओं को उनका स्थान नहीं मिला है। यद्यपि इसकी सूची बड़ी लम्बी है लेकिन हम यहाँ बात कर रहे हैं नेताजी सुभाषचंद्र बोस की। नेताजी की 121 वीं जयंती का आयोजन देशभर में किया जा रहा है, विज्ञापन छापे जा रहे हैं, बंगाल में भी सभी ओर सुभाष उत्सव की धूम मची है। नेताजी के गायब होने के रहस्य का पर्दा तो उठा नहीं लेकिन आज भी उनका कोदलिया स्थित उनका पैतृक आवास उपेक्षा का शिकार है। दक्षिण 24 परगना जिले के कोदलिया में नेताजी के दादाजी हारनाथ बोस ने 18वीं सदी में यहाँ आवास का निर्माण कराया था जो अब पश्चिम बंगाल धरोहर आयोग की सूची में चौथे स्थान पर है। इसके बावजूद इस धरोहर की दशा जर्जर है। पीले रंग से पुते इस दुमंजिला मकान पर एक बोर्ड लगा है जिस पर बांग्ला में लिखा है- "नेताजी सुभाषचन्द्र बसु की पैतृक वासभूमि"

हर वर्ष की भाँति इस बार भी यहाँ राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया लेकिन अवस्था यह है कि इस धरोहर के सभी कमरों में गत तीन वर्षों से ताला बंद है। दूसरी मंजिल के उस कमरे को जिसे दर्शक देखने आते हैं वहाँ प्रवेश की अनुमति नहीं है। दूसरी मंजिल पर प्रवेश ही बंद है। क्योंकि भवन की हालत जर्जर है।

यह वही मकान है जहाँ नेताजी के पिता जानकीनाथ बोस का बचपन बीता था और नेताजी भी यहाँ आया करते थे। स्थानीय लोगों की माने तो 1924 , 1937 तथा 1939 में सुभाष चन्द्र बोस यहाँ आये थे।

यहाँ से कुछ ही दूरी पर विरासती ठाकुर दालान है। कहते हैं यहाँ दुर्गापूजा और सरस्वती पूजा नेताजी की माता प्रभावती बोस ने शुरू कराई थी जो अब भी जारी है। उनका कहना था कि यह पूजा कभी बंद नहीं होनी चाहिए। यही एक पूजा कक्ष में नारायण सेवा की जाती है।

कोदलिया का यह इलाका बोस पाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। ठाकुर दालान के सामने ही यहाँ उसी समय के पोस्ट ऑफिक हैं जो आज भी सचल है और अच्छी हालत में है। यहीं बगल में एक पुस्तकालय भी है। यह भी ऐतिहासिक है। इसे 1917 में नेताजी के पिता जानकीनाथ बोस ने बनवाया था और सश्रद्धा अपने पिता हारनाथ के नाम पर समर्पित कर दिया था। इस पर आज भी "कोदलिया हरनाथ वीणापाणि लाइब्रेरी" का बोर्ड लगा है। इसकी हालत भी बहुत अच्छी नहीं है। हाँ यहाँ आप प्रवेश कर सकते हैं। एक छोटे से कमरे में यहाँ नेताजी के जीवन की झलकियाँ मॉडल के माध्यम से दिखाई गई हैं। दुखद बात यह है कि दो कमरों में फैले पुस्तकालय की पुस्तकें समुचित रखरखाव की कमी से ग्रस्त हैं जो अपने नष्ट होने का इंतजार कर रही हैं।

संतोषजनक सिर्फ यह है कि यहाँ हर बार की तरह इस बार भी नेताजी जयंती पर उन्हें याद किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए और 'सिट एण्ड ड्रा' का आयोजन किया गया। इसका आयोजन नेताजी कृष्टि केन्द्र द्वारा किया गया।

विचारणीय बात यह है कि राज्य की धरोहर विभाग आखिर कर क्या रहा है ? जो स्थान उसकी सूची में चौथे नंबर पर है उसकी इतनी दुर्दशा क्यों। क्या इसे आज गौरवमय रूप नहीं दिया जा सकता ? क्या धरोहर आयोग किसी पूर्वाग्रह का शिकार है या सिर्फ सूची में रखकर ही उसने अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री कर ली है ? देखना यह है कि कब पश्चिम बंगाल धरोहर आयोग की नीद खुलती है ?

यात्रा-वृतान्त

एक साहित्यकार का यात्रा वृतांत
प्राचीन ओलम्पिक का इतिहास

गौरया, शेर, हाथी तो अभी दिखते हैं लेकिन गूगल बाबा की दया से कई देश नक्शे से गायब हो सकते हैं हालिया उदाहरण फिलिस्तीन का है। हमने यही ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध लेखिका माला वर्मा से बात की। यात्राओं पर उनकी कई पुस्तकें हैं । इन यात्रा वृतांतों के कुछ अंश हम अपने पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। पिछली बार पढ़ा "आइए मलयेशिया-सिंगापुर थाइलैंड चलें" से। इस बार उनकी दूसरी पुस्तक "ग्रीस और दुबई से" – **सम्पादक**

माला वर्मा

हुकुमचन्द जूट मिल, पोस्ट : हाजीनगर, जिला : उत्तर 24 परगना,
मोबाइल : 09874115883/9007744346 E-mail : verma_mala2004@yahoo.com

प्राचीन खेल तो बंद हो गया मगर ग्रीस के लोगों के मन के किसी कोने में खेल परम्परा अब भी जिन्दा थी। लोगों ने या कहें दुनिया ने इस मनोरंजक खेल को फिर से प्रारम्भ करने का निश्चय किया। इस आधुनिक ओलंपिक की शुरूआत फिर से सन् 1896 में ग्रीस से ही शुरू हुई। इस बार खेल को खेल भावना से खेला गया न कि किसी धार्मिक भावना के तहत। अब ये खेल सिर्फ ग्रीस में न होकर विश्व के अन्य हिस्सों में बारी-बारी से आयोजित होने लगे तथा सिमें पूरा विश्व भागीदारी करने लगा अब यह खेल सिर्फ पुरुषों का ही नहीं रहा बल्कि महिलाएं भी शामिल होने लगी। खेलों की संख्या भी बहुत बढ़ गई, यहाँ तक की समर के साथ-साथ विंटर ओलंपिक भी प्रायोजित होने लगें कुछ पुराने खेल जैसे कि जेवेलीन थ्रो, डिस्कस थ्रो तथा घुड़दौड़ के खेल अभी भी कायम हैं। वहीं कुछ पुराने खेल जैसे कि रथदौड़ (चैरियट रेस), आर्मर रेस (कवच, शिरस्त्राण, ढाल आदि के साथ) आजकल नहीं होते। पुराने ओलंपिक में सब कुछ खुली जगहों पर होता था मगर आजकल ओलंपिक के स्टेडियम में दर्शकों के लिए छायादार तथा आरामदायक सीटों की व्यवस्था रहती है। आज ओलंपिक पूरे विश्व में इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसके बारे में विस्तार के लिखना बेमानी लगता है। अब तो हर देश चाहता है कि उसके यहाँ ओलंपिक की जाए। यहाँ तक कि भारत भी इच्छुक है। और, ये थी ओलंपिक व अलंपिक खेलों की संक्षिप्त जानकारी।

इस प्राचीन साईट में जहाँ से हम प्रवेश करते हैं इसके बांयी तरफ कुछ टूटी-फूटी दीवार नजर आती है– ये रोमन बाथ के अवशेष हैं जहाँ कभी ठंडे और गर्म पानी की अच्छी व्यवस्था होती थी। इस बाथ में दूर-दराज से आए एथेलिट्स और दर्शक स्नान का मजा लेते थे। इसे देखने के बाद दाहिने साइड में जो खंडहर कॉलम (खंभे) के साथ नजर आते हैं वो जिम्नाजियम व पेलेस्ट्रा (Gymnasium and palestra) थे जहाँ पर एथेलिट्स अपने फुट रेसिंग और कुश्ती की प्रैक्टिस किया करते थे यहाँ जो विशालकाय जिम्नाजियम था उसके ऊपर कभी छत थी। ये यहाँ स्थित स्टेडियम से भी दुगुने साइज में था। इस छत वाले जिम्नाजियम के कारण यहाँ एथेलिट खराब मौसम में भी प्रैक्टिस कर सकते थे, थोड़ा आगे जाने पर एक टूटा-फूटा खंडहर दिखता है जो कभी स्वीमिंग पुल था। इसके साथ ही एक बड़ा सा स्क्वायर 'लियोनीडायोन' (Leonidaion) नाम से स्थित था जो लोगों के ठहरने के काम आता था। बाद में इसे एक रोमन गवर्नर ने अपना निवास स्थल बना लिया था।

हम मंत्रमुग्ध इन खंडहरों को देखते हुए तथा यहाँ की कहानियों को सुनते हुए आगे बढ़ रहे थे। ग्रुप का हर व्यक्ति इस स्थल से अति प्रभावित था। इस स्थान के प्रति कौतूहल, रहस्य, श्रद्धा, आश्चर्य, विस्मय, खुशी जैसे भाव से हम प्लावित हो रहे थे, मन में तरह-तरह की अनुभूति प्रतिक्षण उठती रही। इस विशाल क्षेत्र का कोई सा अंश छूटने न पाये, इसी कोशिश में थे हम। चलते-चलते पैर थक जाते तो कुछेक मिनट के

लिए किसी चट्टान पर बैठकर सुस्ता लेते, पानी पीकर गला तर करते और फिर दूने उत्साह से उठ खड़े होते। देखना बहुत कुछ था, उतना सुनना भी था पर वक्त! ये तो इतनी तेजी से भाग रहा था कि मैंने घड़ी देखना बंद कर दिया। घड़ी देखूं तो दिल-दिमाग अपनी जगह स्थिर न रहें। मेरे मन में रह-रह कर एक बात कौंध रही थी जैसे संसार की सभी नदियों का अपना उद्गम स्थल होता है, दुनिया के सभी महान लोगों के अपने जन्मस्थान नियत हैं। उसी तरह सभी वस्तुओं की अपनी-अपनी जन्मस्थली व कर्मस्थली फिक्सड है। इसी सिद्धान्त के तहत ओलंपिक खेल भी आता है जिसकी जन्मस्थली को देखने के लिए पूरे विश्व में लाखों की संख्या में हर वर्ष पर्यटक चुम्बक की तरह खींचे चले आते हैं और आज भी पर्यटकों की संख्या कम न थी, पर इलाका इतना बड़ा था कि इससे दस गुना लोग भी यहाँ मौजूद होते तो कोई बात न थी।

हमें यहां जो महिला गाइड दी गई थी उसका नॉन स्टॉप बोलना जारी था। अंग्रेजी भी एकदम स्पष्ट, कभी हड़बड़ी में हम कोई बात न समझे तो आग्रह करने पर वो फिर विस्तार से बताती। घटनाएं सच्ची व रोचक हो तो सुनने वाले को बोरियत नहीं होती, घूमते हुए हम इस इलाके के धार्मिक सेंचुरी (Religious Sanctuary) या धार्मिक स्थल के पास पहुँचे जहाँ कभी दो भव्य मंदिर हुआ करते थे-टेंपल ऑफ हेरा और टेंपल ऑफ जीयस। इन दोनों के बारे में विस्तार से चर्चा हो चुकी है। देवी हेरा का मंदिर अपेक्षाकृत छोटा था पर जीयस का मंदिर जो अति विराटकाय था। हेरा के मंदिर में अभी जो दो-तीन कॉलम बचे हैं उन्हें देखने से पता चलता है उनके डिजाइन में थोड़ा बहुत हेर फेर है। ये कॉलम जब बने थे तब उनमें कई जगह लकड़ी का इस्तेमाल किया गया था। बाद में इनमें कुछ कॉलमों को गिरने से बचाने के लिए पत्थर का इस्तेमाल किया गया। वे कॉलम आज भी दिखते हैं। हेरा का मंदिर छह सौ ईसा पूर्व बना था यानि ये जीयस के मंदिर से भी पुराना था। इसलिए इसके खंभों को पत्थरों से बनाया गया ताकि वे सुरक्षित रहे। लकड़ी के जितने खंभे थे आज उनका नामोनिशां नहीं, बल्कि जो पत्थर के बने उनमें भी समरूपता नहीं दिखती। गाइड ने इसे नहीं बताया होता तो ये बात हमें समझ में भी नहीं आती, वैसे भी इतनी सूक्ष्म दृष्टि से हर पत्थर, हर ईंट को देखने के लिए अपने पास न वैसी पारखी नजर थी, न ही अतिरिक्त वक्त।

यहाँ एक और खंडहर मिला था जिसे 'हरमीस ऑफ प्रैक्सीटेल्स' (Hermes of Praxiteles) कहते हैं– यहाँ ग्रीक देवता डायनीसॉस के बचपन का स्वरूप मूर्तिरूप में रखा गया था। ये ग्रीक देवता जीयस और सेमेली का पुत्र था जो जियस की जांघ से पैदा हुआ था। डायोनीसॉस को ड्रामा और शराब दा देवता माना जाता था। ये खंडित मंदिर भी कभी मिट्टी के नीचे दबा था। यहाँ नदियों में हमेशा बाढ़ की स्थिति पैदा होती और बार-बार के इस उफान ने ओलंपिक के इस प्राचीन स्थल को कई-कई फीट मिट्टी के अन्दर दबा दिया था पर भला हो उन पुरातत्वविदों का जिन्होंने कई वर्षों के अथक प्रयास के बाद उस प्राचीन स्थल को वापस हुबहू उसी रूप में ला दिया जो हजारों वर्ष पूर्व था। जमीन तो वही थी पर यहाँ खड़ी वे भव्य इमारतें गायब होकर खंडहर में बदल चुकी हैं।

अब हमारे सामने जीयस का मंदिर था, मंदिर के नाम पर एक लम्बा-चौड़ा आधार दिखा जिसपर कभी मंदिर खड़ा होगा। चौंतीस खंभों की जगह अभी सिर्फ एक ही दिखता है जो 2004 ओलंपिक खेलों के लिए पर्यटकों के दर्शनार्थ बनाया गया था। इस खंभे की ऊँचाई वास्तविक ऊँचाई से आधी ही रखी गई है। इस नकली खंभे को ही देखकर हम आश्चर्य में थे- जब नकली का आकार-प्रकार इतना भव्य और विराटकाय है तो असली का नजारा क्या होगा ? कई असली खंभे गायब हो गए थे पर उन्हीं में से कितने अभी भी आसपास गिरे हुए दिखे। ये जमीन पर पड़े खंभे साइज में दैत्याकार थे, सैकड़ों आदमी भी मिलकर इन्हें हिलाने की शक्ति नहीं जुटा पाते। हम इन्हें छूकर, इनके पास खड़े होकर उस काल, उस भव्यता को गहरे महसूस कर रहे थे। यही नहीं, कई तस्वीरें भी उन मूक पत्थरों के साथ खिंचवायी। जीयस के इस मंदिर के पूरे परिशर को मोटे लोहे के चेन से घेर दिया गया था ताकि दर्शकगण इन पत्थरों से होते हुए इसके आधार या गर्भगृह तक न पहुँच सके। अभी हम यहाँ खड़े थे ये जीयस के मंदिर का पिछला हिस्सा था। अब तो इस मंदिर का कुछ भी नहीं बचा है।

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

मूल्य : 5.00
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

SIMPLEX INFRASTRUCTURES LIMITED

FOR ANY TYPE OF PILE FOUNDATION WORK

CAST-IN- SITU DRIVEN, CAST-IN-SITU BORED, PRECAST DRIVEN,PRECAST PRE-BOARD, STEEL OR R.C.C, SHEET PILES ETC

AND

ALL TYPES OF ENGINEERING AND CONSTRUCTION WORKS FOR CIVIL, STRUCTURAL, MARINE, TANKAGES, PIPING EQUIPMENT ERECTION IN

Power Stations, Road Projects, Fertilizer Projects, Cement Plants, Refinery Constructions, Coal Handling Plants,Paper Mills, R,C,C. or Prestressed Concrete Bridges, Fabrication & Erection of Steel Structures, Hydrocarbon Storage Tanks and Pipeline. Cross-Country Pipeline, Steel Plant Construction, Multi-storied Building, Micro-Tunneling, Box/Pipe Pushing. HDD, High-rise Silo Structures by Slipfoml Technique, Bunkers, letties, Marine Structures, Deep underground basements. Textile factories, Effluent Treatment Plant, Water & Sewage Treatment Plant etc., as well as Turnkey Construction.

AND

For any other type of Industrial and Utility Projects

FOR

Economy, Speed and Quality Constructions.

CONTACT:

SIMPLEX INFRASTRUCTURES LIMITED

Foundation, Reinforced & Prestressed Concrete Specialist

REGD. OFFICE
"Simplex House"
27, Shakespeare Sarani, Kolkata 700 017
Phone: (033) 2301 1600
Fax: (033) 2283 5964/65/66

ADM. OFFICE
12/1. Nellie Sengupta Sarani
Kolkata 700 087
Phone : (033) 22528371/8373/8374
Fax : (033) 22527595

E-mail:simp1cxko1kata@simplexinfra.com, Web: www,simplexlnfrastructures.com

BRANCHES

NEW DELHI
Hemkunth (4th Floor)
89, Nehru Place
New Delhi 110 019
Ph.(01 I) 2643-2515, 2643-6818
2646-8990, 2643-2697
Fax:(0l 1) 2646-5869
E-mail:simplexde1hi@simplexinfra.com

MUMBAI
502-A, Poonam Chambers
Shivsagar Estate
Dr Annie Besant Road
Worli, Mumbai 400 018
Ph.(022) 2491-3537/8397
2492-2064/9034
Fax: (022) 2491-2735
simplexmumbai@simplexinfra.com

CHENNAI
New No. 57 (Old No. 38)
Pantheon Road
'Egmore'
Chennai 600 008
Ph.(044)2858-4802/4803/4804
Fax (044) 2858-4805
Email:simplexchennai@simplexinfra.com

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बेंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित । **संपादक : जितेन्द्र जितांशु**
☎: 9231845289, 2470-4061, E-mail : jjitanshu@yahoo.com,R.N.I. No. WBHIN/2000/1974